

कक्षा 11 · संस्कृतम् ऐच्छिकम् (022) · शाश्वती प्रथमो भागः

सौवर्णशकटिकां देहि

चतुर्थः पाठः सौवर्णशकटिका



महाकविः शूद्रकः · मृच्छकटिकम् (प्रकरणम्), षष्ठः अङ्कः · नाट्यांशः

पाठ-परिचयः

शूद्रक-प्रणीत **मृच्छकटिकम्** (10 अङ्क, प्रकरण) तत्कालीन समाज का दर्पण है: दानशीलता से धनहीन हुए ब्राह्मण सार्थवाह **चारुदत्त** और उज्जयिनी की गणिका **वसन्तसेना** की प्रणय-कथा; अराजकता, द्यूत, चोरी, न्यायालय का पक्षपात, राजा के सम्बन्धियों का स्वेच्छाचार। यह नाट्यांश **छठे अङ्क** से है।

★ **परीक्षा-सुझावः हिंदी में कथा:** पड़ोसी धनी के बेटे की सोने की गाड़ी देखकर चारुदत्त का बेटा **रोहसेन** मचल जाता है। दासी **रदनिका** उसे मिट्टी की गाड़ी देती है, पर बालक ज़िद करता है: 'मुझे इस मिट्टी की गाड़ी से क्या? वही सोने की गाड़ी दो।' रदनिका उसे वसन्तसेना के पास ले जाती है। वसन्तसेना उसे गोद में लेती है: 'इसने पिता का रूप पाया है।' कारण जानकर वह भाग्य को कोसती है: 'हे कृतान्त! कमल-पत्र पर पड़ी जल-बूँद-से (चंचल) मनुष्य-भाग्यों से तुम खेलते हो।' रदनिका कहती है: 'ये तुम्हारी माँ हैं।' बालक: 'झूठ! हमारी माँ होतीं तो इतने आभूषण क्यों पहनतीं?' वसन्तसेना रोते हुए गहने उतारकर मिट्टी की गाड़ी में भर देती है: 'इनसे सोने की गाड़ी बनवा लो।'।

परीक्षा में इस पाठ से ★★★

नाट्यांश (5 अंक): यह पूरा पाठ नाट्यांश-प्रश्न हेतु उपयुक्त · **व्याख्या (5):** 'अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुखः...', 'पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुसदृशैः...', 'मुग्धेन मुखेन अतिकरुणं मन्त्रयसि' · **चरित्र-चित्रणः** वसन्तसेना, रोहसेन · **व्याकरणः** ल्यप्/क्त्वा/क्त (NCERT 6), सन्धि (NCERT 5)।

वसन्तसेनायाः चरित्रम्

उत्तर: (1) **वात्सल्यमयी:** रोहसेन को गोद में लेकर 'पुत्रक' कहती है; (2) **उदार, त्यागशील:** अपने सारे आभूषण बालक को दे देती है; (3) **संवेदनशील:** बालक के दुःख से रो पड़ती है; (4) **विवेकशील:** भाग्य की चंचलता को समझती है; (5) **चारुदत्त के प्रति अनुरक्त:** उसके पुत्र को अपना मानती है।

रोहसेनस्य चरित्रम्

उत्तर: **भोला, हठी** (सोने की गाड़ी की ज़िद), **सुन्दर** (चन्द्रमुख, पिता जैसा रूप), **सत्यवक्ता, बुद्धिमान्** ('अलीकं त्वं भणसि'; माँ अलंकृत क्यों?), **संवेदनशील** ('रोदिषि त्वम्': रोती हुई से गहने नहीं लेता)।

4.1 मूलपाठः, हिंदी अनुवाद: ★★★

(ततः प्रविशति दारकं गृहीत्वा रदनिका) **रदनिका**: एहि वत्स! शकटिकया क्रीडावः। **दारकः** (सकरुणम्) रदनिके! किं मम एतया मृत्तिकाशकटिकया? तामेव सौवर्णशकटिकां देहि।

अनुवाद: (तब बालक को लेकर रदनिका प्रवेश करती है) रदनिका: आओ बेटा! (हम दोनों) गाड़ी से खेलें।

बालक: (करुण स्वर में) रदनिका! मुझे इस मिट्टी की गाड़ी से क्या (लेना)? वही सोने की गाड़ी दो।

रदनिका: (सनिर्वेदं निःश्वस्य) जात! कुतोऽस्माकं सुवर्णव्यवहारः? तातस्य पुनरपि ऋद्ध्या सुवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि। (स्वगतम्) तद्यावद् विनोदयाम्येनम्। आर्याया वसन्तसेनायाः समीपमुपसर्पिष्यामि। (उपसृत्य) आर्ये! प्रणमामि।

अनुवाद: रदनिका: (उदासी से लम्बी साँस लेकर) बेटा! हमारे यहाँ सोने का लेन-देन कहाँ? पिताजी की फिर से समृद्धि होने पर सोने की गाड़ी से खेलोगे। (मन में) तब तक इसका मन बहलाती हूँ; आर्या वसन्तसेना के पास जाती हूँ। (पास जाकर) आर्ये! प्रणाम करती हूँ।

वसन्तसेना: रदनिके! स्वागतं ते। कस्य पुनरयं दारकः? अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।

रदनिका: एष खलु आर्यचारुदत्तस्य पुत्रो रोहसेनो नाम।

अनुवाद: वसन्तसेना: रदनिका! तुम्हारा स्वागत है। यह बालक किसका है? आभूषणों से रहित शरीर वाला होकर भी यह चन्द्रमुख (बालक) मेरे हृदय को आनन्दित कर रहा है। रदनिका: यह आर्य चारुदत्त का पुत्र रोहसेन है।

अलङ्कारः: चन्द्रमुखः रूपक/उपमा (चन्द्र इव मुखं यस्य)।

वसन्तसेना: (बाहू प्रसार्य) एहि मे पुत्रक! आलिङ्ग। (इत्यङ्के उपवेश्य) अनुकृतमनेन पितुः रूपम्। **रदनिका**: न केवलं रूपं, शीलमपि तर्कयामि। एतेन आर्यचारुदत्त आत्मानं विनोदयति।

अनुवाद: वसन्तसेना: (भुजाएँ फैलाकर) आओ मेरे बेटे! गले लगे। (गोद में बिठाकर) इसने पिता का रूप पाया है (पिता जैसा है)। रदनिका: केवल रूप ही नहीं, स्वभाव भी (पिता जैसा) है, ऐसा मैं समझती हूँ। इसी से आर्य चारुदत्त अपना मन बहलाते हैं।

वसन्तसेना: अथ किं निमित्तमेष रोदिति? **रदनिका**: एतेन प्रातिवेशिकगृहपतिदारकस्य सुवर्णशकटिकया क्रीडितम्। तेन च सा नीता। ततः पुनस्तां मार्गयतो मयेयं मृत्तिकाशकटिका कृत्वा दत्ता। ततो भणति 'रदनिके! किं मम एतया मृत्तिकाशकटिकया? तामेव सौवर्णशकटिकां देहि' इति।

अनुवाद: वसन्तसेना: तो यह किस कारण रो रहा है? रदनिका: इसने पड़ोसी गृहस्वामी के बेटे की सोने की गाड़ी से खेला था। वह उसे ले गया। फिर उसे माँगते (खोजते) हुए इसे मैंने यह मिट्टी की गाड़ी बनाकर दी। तब यह कहता है: 'रदनिका! मुझे इस मिट्टी की गाड़ी से क्या? वही सोने की गाड़ी दो।'

वसन्तसेना: हा धिक् हा धिक्! अयमपि नाम परसम्पत्त्या सन्तप्यते? भगवन् कृतान्त! पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुसदृशैः क्रीडसि त्वं पुरुषभागधेयैः। (इति साक्षा) जात! मा रुदिहि! सौवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि।

अनुवाद: वसन्तसेना: हाय धिक्कार है, धिक्कार है! यह (छोटा बालक) भी दूसरे की सम्पत्ति (देखकर) दुःखी हो रहा है? हे भगवान् यमराज (भाग्य)! कमल के पते पर गिरी जल की बूँद के समान (चंचल) मनुष्यों के भाग्यों से तुम खेलते हो। (ऐसा कहकर आँसू भरकर) बेटा! मत रोओ। सोने की गाड़ी से खेलोगे।

अलङ्कारः: पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुसदृशैः उपमा (भाग्य की अस्थिरता)।

दारकः: रदनिके! का एषा? **रदनिका**: जात! आर्या ते जननी भवति। **दारकः**: रदनिके! अलीकं त्वं भणसि।

यद्यस्माकमार्या जननी तत् केन अलङ्कृता?

अनुवाद: बालक: रदनिका! ये कौन हैं? रदनिका: बेटा! आर्या तुम्हारी माता हैं। बालक: रदनिका! तुम झूठ बोलती हो। यदि आर्या हमारी माता हैं, तो (ये) किस कारण आभूषणों से सजी हैं? (हमारी माँ तो गहने नहीं पहनती)

वसन्तसेना: जात! मुग्धेन मुखेन अतिकरुणं मन्त्रयसि। (नाट्येन आभरणान्यवतार्य रोदिति) एषा इदानीं ते जननी संवृत्ता। तद् गृहाणैतमलङ्कारकम्, सौवर्णशकटिकां घटय।

अनुवाद: वसन्तसेना: बेटा! भोले मुख से तुम अत्यन्त करुण बात कह रहे हो। (अभिनय द्वारा आभूषण उतारकर रोती है) यह अब तुम्हारी माता बन गई। तो यह आभूषण लो, सोने की गाड़ी बनवाओ।

दारकः: अपेहि, न ग्रहीष्यामि। रोदिषि त्वम्। **वसन्तसेना**: (अश्रूणि प्रमृज्य) जात! न रोदिष्यामि। गच्छ, क्रीड। (अलङ्कारैर्मृच्छकटिकां पूरयित्वा) जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्। (इति दारकमादाय निष्क्रान्ता रदनिका)

अनुवादः बालकः हटो, नहीं लूँगा। तुम रो रही हो। वसन्तसेना: (आँसू पोंछकर) बेटा! नहीं रोऊँगी। जाओ, खेलो। (आभूषणों से मिट्टी की गाड़ी को भरकर) बेटा! सोने की गाड़ी बनवा लो। (ऐसा कहकर बालक को लेकर रदनिका निकल जाती है)

नाटकीय निर्देशाः (पारिभाषिक शब्दाः)

निर्देशः	अर्थः
ततः प्रविशति	तब प्रवेश करता/करती है
सकरुणम्	करुणा के साथ
सनिर्वेदम्	खेद/उदासी के साथ
स्वगतम्	अपने मन में (दूसरे पात्र नहीं सुनते)
उपसृत्य	पास जाकर
सास्रा	आँसुओं सहित
नाट्येन	अभिनय द्वारा
निष्क्रान्ता	बाहर निकल गई

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

पदम्	अर्थः
दारकम्	बालकम्, बच्चे को
शकटिकया	गाड़ी से
मृत्तिकाशकटिका	मिट्टी की गाड़ी
सौवर्णशकटिका	सोने की गाड़ी
सुवर्णव्यवहारः	सोने का लेन-देन
ऋद्ध्या	समृद्धि से
विनोदयामि	बहलाती हूँ
उपसर्पिष्यामि	पास जाऊँगी
अनलङ्कृतशरीरः	आभूषण-रहित शरीर वाला
अनुकृतम्	अनुकरण किया (अनु + कृ + क्त)
तर्कयामि	अनुमान करती हूँ
किंनिमित्तम्	किस कारण से
प्रातिवेशिकः	पड़ोसी
मार्गयतः	खोजते हुए का
परसम्पत्त्या	दूसरे की समृद्धि से
सन्तप्यते	दुःखी होता है
कृतान्त	यमराज, भाग्य (सम्बोधन)
पुष्करपत्रम्	कमल का पत्ता
पुरुषभागधेयैः	मनुष्यों के भाग्यों से
अलीकम्	असत्य, झूठ

अलङ्कृता	अलम् + कृ + क्त + टाप्; सजी हुई
मुग्धेन मुखेन	भोले मुख से
अवतार्य	अव + तृ + णिच् + ल्यप्; उतारकर
घटय	बनवाओ
अपेहि	दूर हटो
प्रमृज्य	प्र + मृज् + ल्यप्; पोंछकर
पूरयित्वा	पूर + णिच् + क्त्वा; भरकर

NCERT अभ्यासः, पूर्णतः हलः

1. संस्कृतेन उत्तरम्।

उत्तरः (क) मृच्छकटिकस्य रचयिता **शूद्रकः**। (ख) दारकः रदनिकां **सौवर्णशकटिकाम्** अयाचत। (ग) वसन्तसेना पृच्छति: **‘कस्य पुनरयं दारकः?’** (घ) रदनिका **‘तातस्य पुनरपि ऋद्ध्या सुवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि’** इति उक्त्वा दारकं तोषितवती। (ङ) रोहसेनः **आर्यचारुदत्तस्य** पुत्रः आसीत्। (च) आर्यचारुदत्तः **एतेन (रोहसेनेन)** आत्मानं विनोदयति। (छ) रोहसेनः **सौवर्णशकटिकाम्** याचते। (ज) वसन्तसेना **अलङ्कारैः** मृच्छकटिकां पूरयति। (झ) रोहसेनेन स्वपितुः **रूपं (शीलं च)** अनुकृतम्। (ञ) वसन्तसेना **‘जात! मा रुदिहि! सौवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि’** इति उक्त्वा दारकं सान्त्वयामास।

2. व्याख्या (हिन्दी, संक्षेप)

उत्तरः (क) **अनलङ्कृतशरीरोऽपि...**: रोहसेन को पहली बार देखकर वसन्तसेना कहती है कि बिना आभूषण के भी यह चन्द्रमुख बालक मेरा हृदय आनन्दित करता है: सहज सौन्दर्य आभूषणों का मोहताज नहीं।
(ख) न केवलं रूपं शीलमपि तर्कयामि: रदनिका कहती है कि रोहसेन ने पिता चारुदत्त का केवल रूप नहीं, स्वभाव (शील) भी पाया है।
(ग) पुष्करपत्रपतित... पुरुषभागधेयैः: वसन्तसेना भाग्य को उलाहना देती है: जैसे कमल-पत्र पर पड़ी बूँद क्षण में लुढ़क जाती है, वैसे ही मनुष्यों का भाग्य चंचल है; कभी धनी चारुदत्त आज निर्धन है।
(घ) मुग्धेन मुखेन अतिकरुणं मन्त्रयसि: बालक के ‘आभूषण पहनने वाली हमारी माँ कैसे?’ प्रश्न पर वसन्तसेना कहती है: भोले मुख से तुम अत्यन्त मार्मिक बात कह रहे हो।

3. वाक्यप्रयोगः

उत्तरः मृत्तिकाशकटिकया: **बालः मृत्तिकाशकटिकया क्रीडति।** · सुवर्णव्यवहारः: **निर्धनस्य गृहे सुवर्णव्यवहारः न भवति।** · अश्रूणि: **माता अश्रूणि प्रमार्जयति।** · विनोदयति: **पिता पुत्रं विनोदयति।** · प्रातिवेशिकः: **मम प्रातिवेशिकः सज्जनः।** · ऋद्ध्या: **ऋद्ध्या सह विनयः अपि वर्धते।** · रोदिति: **शिशुः क्षुधया रोदिति।**

4. कर्तृपदानि

उत्तरः (क) **आवाम्** क्रीडावः। (ख) **अहम्** विनोदयामि। (ग) **त्वम्** सुवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि। (घ) **त्वम्** अलीकं भणसि। (ङ) किंनिमित्तम् **एषः (दारकः)** रोदिति।

5. सन्धिविच्छेदः

उत्तरः (क) कुतोऽस्माकम् = कुतः + अस्माकम् (ख) पुनरपि = पुनः + अपि (ग) किंनिमित्तम् = किम् + निमित्तम् (घ) पुनस्ताम् = पुनः + ताम् (ङ) यद्यस्माकम् = यदि + अस्माकम् (च) आभरणान्यवतार्य = आभरणानि + अवतार्य

6. प्रकृति-प्रत्ययौ → पदम्

उत्तरः (क) निःश्वस्य (ख) अनुकृतम् (ग) अलङ्कृता (घ) अवतार्य (ङ) पूर्वा (पूरयित्वा, णिच्) (च) आदाय (छ) गृहीत्वा (ज) उपसृत्य (झ) क्रीडितम् (ञ) प्रमृज्य

परीक्षा-शैली नाट्यांशः (5 अंक), हल सहित

“वसन्तसेनाः हा धिक् हा धिक्!... दारकः रदनिके! अलीकं त्वं भणसि। यद्यस्माकमार्या जननी तत् केन अलङ्कृता?”

उत्तरः (अ) एकपदेनः (i) कः परसम्पत्त्या सन्तप्यते? **दारकः** (ii) वसन्तसेना कं सम्बोधयति? **कृतान्तम्** (भगवन्तं कृतान्तम्)

(आ) पूर्णवाक्येनः (i) कृतान्तः कैः क्रीडति? **कृतान्तः** पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुसदृशैः पुरुषभागधेयैः क्रीडति।

(ii) दारकः रदनिकां किं कथयति? **दारकः** कथयति ‘रदनिके! अलीकं त्वं भणसि, यदि अस्माकम् आर्या जननी तत् केन अलङ्कृता?’

(इ) भाषिककार्यम्: (i) ‘असत्यम्’ पर्यायः? **अलीकम्** (ii) ‘भणसि’ कर्ता? **त्वम्**

प्रश्ननिर्माणम्

उत्तरः (क) प्रातिवेशिकगृहपतिदारकस्य शकटिका → **कस्य** (ख) वसन्तसेना अलङ्कारैः शकटिकां पूरयति → **कैः**

(ग) **रदनिका** दारकं गृहीत्वा प्रविशति → **का** (घ) **मुग्धेन** मुखेन मन्त्रयसि → **कीदृशेन**

बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः 20 MCQs

- मृच्छकटिकस्य रचयिता?
(A) कालिदासः (B) भासः (C) शूद्रकः (D) हर्षः
- पाठः कतमात् अङ्गात्?
(A) षष्ठात् (B) प्रथमात् (C) दशमात् (D) तृतीयात्
- रोहसेनः कस्य पुत्रः?
(A) शकारस्य (B) राज्ञः (C) प्रातिवेशिकस्य (D) चारुदत्तस्य
- रदनिका का?
(A) माता (B) दासी (C) भगिनी (D) वसन्तसेना
- दारकः कीदृशीं शकटिकां याचते?
(A) मृत्तिकां (B) सौवर्णाम् (C) काष्ठमयीम् (D) लौहमयीम्
- ‘प्रातिवेशिकः’ इत्यस्य अर्थः?
(A) अतिथिः (B) भृत्यः (C) राजा (D) पड़ोसी
- वसन्तसेना दारकं किं कथयति?
(A) चन्द्रमुखः (B) कमलनेत्रः (C) सूर्यमुखः (D) मृगनयनः
- रोहसेनेन पितुः किम् अनुकृतम्?
(A) नाम (B) वचनम् (C) रूपम् (D) धनम्
- पुरुषभागधेयानि किं सदृशानि?
(A) नक्षत्रैः (B) पर्वतैः (C) वृक्षैः (D) पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुभिः
- ‘अलीकम्’ इत्यस्य अर्थः?
(A) सत्यम् (B) असत्यम् (C) मधुरम् (D) कटुम्
- दारकः कस्मात् आर्यां जननीं न मन्यते?
(A) सा रोदिति (B) सा दूरे (C) सा अलङ्कृता (D) सा क्रुद्धा
- वसन्तसेना कैः मृच्छकटिकां पूरयति?
(A) अलङ्कारैः (B) मोदकैः (C) क्रीडनकैः (D) पुष्पैः
- ‘प्रमृज्य’ इत्यत्र प्रत्ययः?
(A) क्त्वा (B) ल्यप् (C) तुमुन् (D) क्त
- ‘स्वगतम्’ इत्यस्य अर्थः?
(A) उच्चैः (B) स्वागतम् (C) अपने मन में (D) सर्वेभ्यः
- ‘कुतोऽस्माकम्’ विच्छेदः?
(A) कुतो + स्माकम् (B) कुतः + स्माकम् (C) कुत + अस्माकम् (D) कुतः + अस्माकम्
- दारकः आभरणानि किमर्थं न गृह्णाति?
(A) वसन्तसेना रोदिति (B) सः भीतः (C) तानि गुरुरूपि (D) माता निषेधति
- मृच्छकटिकं कीदृशं रूपकम्?
(A) प्रकरणम् (B) व्यायोगः (C) नाटिका (D) प्रहसनम्
- ‘अलम् + कृ + क्त + टाप्’?
(A) अलङ्करणम् (B) अलङ्कारः (C) अलङ्कृत्य (D) अलङ्कृता
- ‘हे कृतान्तः’ कृतान्तः कः?
(A) चारुदत्तः (B) यमः/भाग्यम् (C) इन्द्रः (D) राजा
- पाठे कस्य भावः प्रधानः?
(A) वीरस्य (B) हास्यस्य (C) वात्सल्यस्य (D) भयस्य

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: रोहसेन मिट्टी की गाड़ी से सन्तुष्ट नहीं था। कारण: उसने पड़ोसी के बेटे की सोने की गाड़ी देखी थी।
2. कथन: वसन्तसेना ने अपने आभूषण दे दिए। कारण: वह वात्सल्यमयी और उदार थी।
3. कथन: रदनिका ने बालक को सोने की गाड़ी दिला दी। कारण: चारुदत्त के घर सोने का लेन-देन नहीं था।
4. कथन: रोहसेन ने तुरन्त आभूषण ले लिए। कारण: वसन्तसेना रो रही थी, इसलिए उसने 'अपेहि' कहा।
5. कथन: वसन्तसेना ने भाग्य को कोसा। कारण: मनुष्यों का भाग्य कमल-पत्र की बूँद-सा चंचल है।
6. कथन: मृच्छकटिक में 10 अङ्क हैं। कारण: यह शूद्रक की रचना है।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

अन्तिम-रात्रि सारांशः

- शूद्रक, मृच्छकटिक (प्रकरण, 10 अङ्क), अङ्क 6; पात्र: रदनिका (दासी), रोहसेन (चारुदत्त-पुत्र), वसन्तसेना।
- मृत्तिकाशकटिका vs सौवर्णशकटिका; प्रातिवेशिक का पुत्र; 'किं मम एतया मृत्तिकाशकटिकया?'
- अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुखः; अनुकृतं पितुः रूपम्; न केवलं रूपं शीलमपि।
- पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुसदृशैः पुरुषभागधेयैः (उपमा); अलीकं त्वं भणसि; अलङ्कारैः मृच्छकटिकां पूरयित्वा।